

हुकम या कार्यवाही

अज अदालत

उपखण्ड अधिकारी

मुकाम

हिण्डोली

.....  
.....  
किस्म मुकदमा ..... नं. 195/पा० फा 25

पुनः जीवित कर

तारीख हुकम

हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

नम्बर अहकाम हुकम की तारीख में जारी हुकम

20/26

पत्रावली पेश। दौराने बहुत बुरस वकील अर्थात् कचन क्रिया की प्रकृति से सम्बन्धित मूल वाद 7/1/2014 से दिनांक - 12/06/2015 को वाद वादी स्वारीज कर काउन्टर स्लेम स्वीकार कर वाद "प्राथमिक डिमी" क्रिया गया था। व प्रा. फा 78/14 से कार्यवाही रोप कर दी गई थी। दुमारे द्वारा अपील करने पर अपीलीय न्यायालय ने आदेश दिनांक - 12/6/15 को निरस्त कर दिनांक - 1/11/2017 को कर दिया था व प्रकरण इस न्यायालय में पुनः दर्ज कर लिया है। परन्तु 212 R.T. Act का प्रा. फा पुनः दर्ज नही क्रिया गया है। अतः प्रा. फा स्वीकार कर प्रकरण को पुनः जीवित कर उसी स्टैज पर सुनवाई की जावे।

स्वतंत्र में वकील अर्थात् कचन क्रिया की विवादित श्रुतियाँ सशुद्ध स्वीकृत की हैं। अर्थात् 11/2 व अर्थात् 11/2 के डिस्मिसर हैं। काउन्टर स्लेम पेश क्रिया। धारा 188 का दावा स्वारीज हो गया तो T.I. स्वतः स्वारीज हो गई। जियकी इन्होंने अपील नही की है। T.I. को सिविल दुमारे 12 वर्ष हो गये हैं। रिशोर नही करवाया है। दावा राजस्व मण्डल निगरानी में विचारणीय है। ये नया प्रकरण पेश कर सकते हैं। प्रा. फा स्वारीज क्रिया जावे।

दुमारे बहुत बुरस वकील पक्षकारन द्वारा दौराने बहुत बुरस परन्तु तर्कपरमनन क्रिया। सिविल प्रक्रिया सॉडिला के आदेश 29 नियम 2 के उपनियम 22 में निर्दिष्ट है कि "वादपत्र को स्वारीज करने के आदेश को अपीली न्यायालय में अपास्त कर दिया, तो विचारण न्यायालय द्वारा जारी क्रिया गया अस्थायी आदेश अपने आप

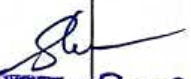
उपखण्ड अधिकारी हिण्डोली

हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख  
अहकाम जो इस  
हुकम की तामील  
में जारी हुए

पुनः जीवित नदी हुने जाता।"

पार्थी द्वारा पूर्व में श्वारीज पुकरण की अपील  
कर इस न्यायालय द्वारा जारी आदेश को अपास्त  
नही करवाया हुँ। ऐसी स्थिति में प्रा.पत्र पार्थी  
विधि अद्यु रूप नदी हुने। पोषणीय नदी हुने  
से श्वारीज किया जाता हुँ। पत्रावली के सल  
शुमार की जाकर बाद तकमिल नम्बर से  
कम हुकर दारखिल दफतर हुने।

  
उपखण्ड अधिकारी  
हिण्डोली